

শ্রীঃ
শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায় নমঃ
শ্রীমান্ বেক্টনাথার্যঃ করিতাকিঁককেসরী।
বেদান্তাচার্যর্যো মে সন্নিধত্তাং সদা হৃদি ॥

॥ শ্রী রঙ্গনাথপাদুকাসহস্রম্ ॥

॥ সুভাষিতপদ্ধতিঃ অষ্টাবিংশী ॥

This document has been prepared by*
Sunder Kidambi
with the blessings of
শ্রী রঙ্গরামানুজ মহাদেশিকন্
His Holiness śrīmad āṇḍavan of śrīraṅgam

*This was typeset using Bengali for T_EX.

श्रीः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
॥ सुभाषितपद्धतिः अष्टारिंशी ॥

श्रीमान् रेङ्कटनाथार्यः करितार्किककेसरी।
वेदान्ताचार्यवर्यो मे सन्निधत्तां सदा हृदि ॥

कलासु काष्ठामातिष्ठन् भूम्ने सस्रस्निनामपि।
पादुका रत्नधुर्यस्य भरतराध्यतां गता ॥ २८-१ ॥

सन्तः स्वदेशपरदेशरिभागशून्यां
हन्तु स्वर्तिमनघां न परित्यजन्ति।
राज्ये रने च रघुपुङ्गरपादरक्षा
नैजं जहौ न खलु कण्टकशोधनं तत् ॥ २८-२ ॥

ब्रह्मान्ततामधिजगाम तृणं प्रयुक्तं
पुण्यं शरव्यामभरत् पयसान्निधिर्वा।
पृथ्वीं शशास परिमुक्तपदं पदत्रं
किं वा न किं भरति केलिरिधौ रिभूनाम् ॥ २८-३ ॥

अन्येषु सतस्रपि नरेन्द्रसूतेषु दैराद्
ब्रष्टः पदादधिकरोति पदं पदाहः।
प्रायो निदर्शयति तत् प्रथमो रघुणां
ततपादयोः प्रतिनिधी मणिपादुके वा ॥ २८-४ ॥

चरणमनघर्षुतेः कस्यचित्प्राप्य नित्यं
सकलभुरनगुप्त्यै सतपथे रतते यः।
नरपतिवह्मानं पादुकेराधिगच्छन्
स भरति समयेषु प्रेम्कितजैरुपास्यः ॥ २८-५ ॥

रामे राज्यं पितुरभिमतं सम्मतं च प्रजानां
माता रव्रे तदिह भरते सत्यरादी ददौ च।
चित्तातीतः समजनि तदा पादुकाग्र्याभिषेको
दुर्बिज्जानस्वहृदयमहो दैरमत्र प्रमाणम् ॥ २८-६ ॥

নাতিক্রামেচ্চরণরহনাতপাদুকা পাদপীঠং
 যদ্বাসন্নং পরমিহ সদা ভাতি রাজাসনস্য ।
 পূর্বত্রৈব প্রণিহিতমভূদ্ধন্ত রামেণ রাজ্যং
 শক্লে ভতুর্বহমতিপদং বিক্রমে সাহচর্যম্ ॥ ২৮-৭ ॥

প্রতিপদচপলাপি পাদুকা
 রঘুপতিনা স্বপদে নিরেশিতা ।
 সমজনি নিভৃতস্থিতিস্তদা
 ভবতি গুণঃ শ্রিয়মভূপেযুষাম্ ॥ ২৮-৮ ॥

গতিহেতুরভূত্ ক্চিৎপদে স্থিতিহেতুমণিপাদুকা ক্চিৎ ।
 ন হি রস্তুষু শক্তিनिश्चयो नियतिः केवलमीश्वरेच्छया ॥ ২৮-৯ ॥

অধরীকৃতোপি মহতা তমের সেরেত সাদরং ভূষুঃ ।
 অলভত সময়ে রামাত্ পাদাক্রান্তাপি পাদুকা রাজ্যম্ ॥ ২৮-১০ ॥

॥ ইতি শ্রীপাদুকাসহস্রে সুভাষিতপদ্ধতিঃ অষ্টাবিংশী ॥

কবিতার্কিকসিংহায় কল্যাণগুণশালিনে ।
 শ্রীমতে বেক্টেশায় বেদান্তগুরবে নমঃ ॥